GOVERNMENT VEDRAM COLLEGE, MALKHARODA, DIST.- JANJGIR-CHAMPA, [C.G.]
शासकीय वेदराम महाविद्यालय, मालखरौदा, जिला: जांजगीर- चाम्पा, [छ.ग.]
Registered Under Section 2(F) & 12(B) of UGC Act
AFFILIATED TO SHAHEED NANDKUMAR PATEL VISHWAVIDYALAYA, RAIGARH, CHHATTISGARH
Website–www.gvcmalkharoda.in Email- principalmalkharoda@rediffmail.com Mobile No: 7489175680

Best Practice

राष्ट्रीय सेवा योजना

कृत

आमाबारी

शासकीय वेदराम महाविद्यालय मालखरौदा
जिला–जांजगीर–चाम्पा (छ.ग.)

शीर्षक :– एन. एस. एस. आमाबारी का निर्माण

एक बंजर भूमी पर आमाबारी का निर्माण चुनौतीपूर्ण कार्य था फिर भी यह कार्य सम्पन्न हुआ ।

एन. एस. एस. आमाबारी

उदेश्य :—

किसी भी विषेष कार्य की सम्पन्नता या पूर्णता के लिए उद्देष्यपूर्ण कार्य का होना आवष्यक है। एन.एस.एस. आमाबारी का निर्माण एक बड़ा कार्य है। इसका उद्देष्य तो केवल एक ही था कि महाविद्यालय कैम्पस को ग्रीन कैम्पस बनाया जाय। परन्तु एन.एस.एस. आमाबारी का उद्देष्य बड़ा व्यापक हो गया। एन.एस.एस. आमाबारी के उद्देष्य निम्नवत हैं :—

1. विद्यार्थियों को एन.एस.एस. के माध्यम से श्रम करने हेतु प्रोत्साहित करना।
2. छात्र/छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास करना।
3. विद्यार्थियों में स्वतः स्फूर्त रूप से कार्य करने की जिज्ञासा को बढ़ावा दिलाना।
4. विद्यार्थियों को श्रम करके ग्रीन कैम्पस का निर्माण में सीधे योगदान लेना।
5. एन.एस.एस. के माध्यम से राष्ट्र सेवा की महत्व को बताना।
6. आम की आर्थिक महत्व को विद्यार्थियों को बताना।
7. विद्यार्थियों में परस्पर सहयोग पूर्ण कार्य परिवेष को बढ़ावा देना।
8. ये बताने का प्रयास करना कि बंजर भूमि में भी पेड़ लग सकता है।

Context:- कार्य प्रस्थितिया :–

एन.एस.एस. आमाबारी का निर्माण एक दुरूह कार्य था। इसकी शुरूवात एन.एस.एस. के द्वारा किया गया। महाविद्यालय की एन.एस.एस. इकाई ने इसकी शुरूवात तो एक वृक्षारोपण कार्यक्रम के तहत किया गया परन्तु समय के साथ इसका उद्देष्य व कार्य योजना बढ़कर आमाबारी में बदल गया। शुरूवात में बहुत कठिनाईयां आयी जैसे कि छात्रों के कैसे श्रम करने के लिए प्रोत्साहित करें। आज के दौर में हम सब जानते है कि छात्रों के श्रम करने के लिए राजी करना कितना मुष्किल है। दूसरी सबसे बड़ी कठिनाई वित्त की हुई। एन.एस.एस. के पास वित्त की कोई व्यवस्था तो होती नहीं हैं। फिर एन.एस.एस. के नियमित गतिविधियों में एन.एस.एस. आमाबारी के कार्य को शामिल करते हुए इस कार्य की शुरूवात की गई। वित्त की कुछ व्यवस्था महाविद्यालय से मिली जैसे कांटातार, सीमेन्ट, गिट्टी, रेत आदि। पौधे हमने जन सहयोग से नर्सरी भूतहा से प्राप्त किये।

हम सब जानते है कि पेड़ लगाना बहुत आसान है परन्तु उसकी सुरक्षा कितना मुष्किल है। महाविद्यालय परिसर 12 एकड़ में स्थित है। जो कि बिना बाउन्ड्रीवाल का है व चारों तरफ से खुला है। इसलिए पेड़ों की सुरक्षा तब से बड़ी चुनौती थी। इसके लिए एन.एस.एस. के स्वयं सेवकों द्वारा ही हमने सीमेन्ट के खम्भें महाविद्यालय परिसर में स्वयं बनाये। खम्भें बनाकर एन.एस.एस. के विद्यार्थियों द्वारा कांटातार से बाउन्ड्रीवाल का निर्माण धीरे–धीरे किया गया।

सिमेन्ट की खंभो का निर्माण

सिमेन्ट की खंभो का निर्माण

सिमेन्ट की खंभो का निर्माण

बंजर भूमि में पौधरोपण करना बड़ा कठिन कार्य है। इसके लिए खाद, रेत, व मिट्टी की आवष्यकता होती है क्योंकि भूमि तो दर्रा वाली भूमि है। खाद की व्यवस्था भी हमने जन सहयोग से लिए तथा प्रत्येक विद्यार्थी से अपने घरों से थोड़ा–थोड़ा (1 कि.ग्रा., 2 कि.ग्रा.) गोबर खाद मगांया गया। बंजर भूमि में पेड़ लगाने के लिए गड्ढों का निमार्ण भी बहुत कठिन कार्य है फिर हमारे एन.एस.

एस. स्वयं सेवक ने लगभग 150 गड्ढों की खुदाई कर उसमें आम के पेड़ लगायें। जो एक बहुत ही कठिन कार्य है।

उद्देष्य के अनुसार आमाबारी का निर्माण वो भी विद्यार्थियों के सहयोग से करना अत्यंत कठिन कार्य है। फिर भी योजनाबद्ध तरीके से कार्ययोजना बनाया गया जिसके तहत पेड़ों की सुरक्षा, सिंचाई की व्यवस्था का उचित ध्यान रखकर कार्य किया गया।

The Practice (कार्य विवरण) :-

किसी कार्य की पूर्ति कर उसे धरातल पर लाना कितना मुष्किल कार्य है इसका सीधा उदाहरण एन.एस.एस. आमाबारी का निर्माण है। कहते है शुरूवात करना ही कठिन है, शुरूवात के बाद आगे बढ़ने से रास्ते सरल होते जाते हैं। ये सही हुआ भी शुरूवात में एन.एस.एस. के विद्यार्थियों द्वारा कार्य करने से भागने की प्रवृत्ति थी, परन्तु धीरे–धीरे जब उनको यह समझ में आने लगा कि ये जो कार्य हो रहा है उनके लिए ही है। इनसे उनको ही लाभ होगा। तो वे स्वतः इस कार्य में अपना सहयोग देने लगे।

एन.एस.एस. आमाबारी का निर्माण कार्य की शुरूवात हमने खम्भों के निर्माण कार्य से किया। कालेज परिसर में ही एन.एस.एस. स्वयं सेवकों ने 200 खम्भों का निर्माण किया। खम्भें निर्माण के बाद परिसर के लगभग 3 एकड़ जमीन का इन्हीं खम्भों से कांटातार से बाउन्ड्रीवाल का निर्माण किया गया। बाउन्ड्री करने के पष्चात हमने भूमि का समतलीकरण किया फिर नर्सरी उद्यान अधीक्षक भूतहा के मार्गदर्षन में पेड़ लगाने के लिए गड्ढों की खुदाई कार्य किया गया। गड्ढों में गोबर खाद, रेत व मिट्टी का मिश्रण बनाकर बॉटनी डिपार्टमेंट के विद्यार्थियों के सहयोग से वैज्ञानिक तरीकों से पेड़ों को लगाने का कार्य किया गया।

एक से दूसरे पेड़ की दूरी समान रखी गई है साथ ही नर्सरी की तरह एक कतार में पेड़ों को लगाई गई । दो पेड़ों की बीच की दूरी लगभग 15 फीट रखी गई है। इस तरह पूर 3 एकड़ की भूमि पर लगभग 150 पेड़ आम का पेड़ लगाया गया।

अब सबसे बड़ी समस्या इसे जीवित रखने की थी अर्थात् सिंचाई की। इसकी भी व्यवस्था हमने उद्यान अधीक्षक के मार्गदर्षन में अच्छे से वैज्ञानिक तरीके के द्वारा किया गया। परिसर में हमारे पास तीन बोरवेल पहले से थें। सिंचाई के लिए हमने प्रत्येक पेड़ को एक–दूसरे से नालियों के माध्यम से जोड़ने का तरीका अपनाया ताकि महाविद्यालय में जब छुट्टियां चल रही हो तो कोई एक व्यक्ति के द्वारा केवल मोटर पम्प को स्टार्ट कर पानी नाली में लगा देने से ही पूरे पौधे की सिंचाई एक साथ हो जाये और कारण है कि आज तीन वर्ष के बाद हमारा आमाबारी अपने उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ रहा है।

एन.एस.एस. आमाबारी का **कार्य निम्नाकिंत स्तरो पर पूर्ण किया गया :–**

1. वित की व्यवस्था
2. सुरक्षा के लिए कांटा तार से घेरा करना
3. सिमेन्ट की खंभो का निर्माण
4. कांटा तार से घेरा करना
5. पौधो की व्यवस्था
6. पौधौ का रोपण
7. सिंचाई की उचित व्यवस्था
8. परिणाम

1. वित की व्यवस्था

शुरूवात कठिन था । अपने एन एस एस की दो साल की पाकेटमनी की राशि से शुरूवात की गई। जब कार्य आगे बढ़ा तब महाविद्यालय ने सहयोग किया । सहयोग का परिणाम ये हुआ कि जो एक एकड़ में सोचा गया था वो लगभग चार एकड़ में पौधा रोपण हुआ ।

कांटा तार से घेरा करना

कांटा तार से घेरा करना

कांटा तार से घेरा करना

पौधो की व्यवस्था

- पौधो की व्यवस्था किसानो के माध्यम से किया गया जिसमें आम के 150 एवं पपीता के 200 पौधों की व्यवस्था हुई । 500 मुनगा का पौधा छात्रों ने स्वयं ही तैयार किया । कुछ पौधे कय कर लाया गया ।

पौधो की नर्सरी

पौधौ का रोपण

- पौधौ का रोपण सभी छात्रो ने मिलकर किया है –

पौधौ का रोपण

पौधौ का रोपण

INFINIX HOT 8 | 13MP
AI TRIPLE CAMERA

INFINIX HOT 8 | 13MP
AI TRIPLE CAMERA

INFINIX HOT 8 | 13MP
AI TRIPLE CAMERA

सिंचाई की उचित व्यवस्था

- सिंचाई के लिए एक माडल का विकास किया गया है जिसमें प्रत्येक पौधे को एक दूसरे से नालियों के द्धारा जोड़ दिया गया जिससे पानी डालना आसान हो गया । केवल मोटर पम्प को चालू करने की जरूरत होती है । केवल एक व्यक्ति ही यह कार्य आसानी से कर सकता है । इसी का परिणाम था कि पूरे गर्मी व लाकडाउन की अवधी में भी पूरे पौधो की सिंचाई की जा सकी है जो कि एक मिसाल है ।

परिणाम

बहुत कम लागत से आमाबारी के रूप में महाविद्यालय आज ग्रीन केम्पस के रूप में विकसित हो रहा है । आने वाले समय में आमाबारी से आर्थिक लाभ की भी सम्भावना होगी , जिससे एन एस एस आत्मनिर्भर हो जायेगी ।

धन्यवाद